इकाई 9 यूरोप में कहानी

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 फ्रांस में कहानी

9.2.1 फ्रांसीसी कहानीः उन्नीसवीं शताब्दी

9.2.2 फ्रांसीसी कहानी और बीसवीं सदी

9.2.3 फ्रांसीसी कहानी में स्त्री लेखन

9.3 ब्रिटेन में कहानी

9.4 जर्मनी में कहानी

9.5. रूस में कहानी

9.6 इटली में कहानी

9.7 अन्य यूरोपीय देशों में कहानियाँ

9.8 यूरोप के यहूदी कहानीकार

9.9 सारांश

अभ्यास

9.0 उद्देश्य

यह एम0ए0 हिन्दी के द्वितीय वर्ष के कहानी से सम्बन्धित मॉड्यूल के पाठ्यक्रम कहानीः स्वरूप और विकास से सम्बन्धित तीसरे खण्ड की नवीं इकाई है। इस इकाई में हम कहानी विधा के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में यूरोप के अवदान पर दृष्टिपात करेगें। हम जानते हैं कि कहानी एक आधुनिक गद्यरूप है और यह जीवन के यथार्थ की कलात्मक पुनर्सृष्टि करता है। कहानी की अपनी निजी विशेषतायें होती हैं। इन निजी विशेषताओं का निर्माण करने में यूरोप की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस इकाई को पढने के बाद आप यूरोप के विभिन्न देशों में कहानी की विकास–यात्रा को समझ सकेगें/सकेंगी।

9.1 प्रस्तावना

यूरोप में कहानी को उस मौखिक परंपरा से जोड़ा जाता है जिसने होमर के महाकाव्यों 'इलियाड' और 'ओडिसी' को जन्म दिया। यह मौखिक वृत्तान्त पद्य में रचे गए। गद्य में कहानी की लोकप्रिय अभिव्यक्ति ईसप की नीतिकथाओं (फेबल्स) में हुई। रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत् कुछ यथार्थवादी कलात्मक दृष्टांत लोकप्रिय हुए। यूरोप में इसी मौखिक परंपरा से कहानी लेखन का विकास माना जाता है। चौदहवीं शताब्दी के शुरूआती वर्षों में चौसर के 'कैंटरबरी टेल्स' और बोकैशियों के 'डिकैमरान' में कहानी की लिखित रूप में अभिव्यक्ति होती है। इन दोनों पुस्तकों में अपने लिखित रूप में कहानी की निजी विशेषताओं को आकार लेते हुए देखा जा सकता है। सत्रहवीं शताब्दी में फ्रांस की लेखिका मदाम लाफ़ायते की उपन्यासिकाओं ने कहानी लेखन को प्रोत्साहित किया।

यूरोप में परिकथाओं के प्रकाशन और अंतोइन गालाँ के 'एक हजार एक रातें' या 'अरब की रातें' के पहले आधुनिक अनुवाद ने अठारहवीं शताब्दी में एक आधुनिक विधा के रूप में कहानी की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। अठारहवीं शताब्दी में वोल्तायर, दीदरो और अन्य लेखकों की कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं। आज कहानी विधा ने जो रूप अर्जित किया है, उसका प्रादुर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। इसमें ग्रिम बंधुओं की 'परिकथायें' और गोगोल की 'दिकान्का की शामें' उल्लेखनीय है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यूरोप में विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन को लोकप्रियता मिलने के साथ–साथ कहानियों की मांग भी बढ़ने लगी और विश्व साहित्य की कई अमर तथा क्लासिक कहानियों की रचना इसी दौर में हुई। अब यूरोप में कहानी लेखन के उर्वर दौर की शुरूआत हो चुकी थी। आगे इस इकाई में हम यूरोप के विभिन्न देशों में कहानी के विकास पर दृष्टिपात करेगें।

9.2 फ्रांस में कहानी

9.2.1 फ्रांसीसी कहानी : उन्नीसवीं शताब्दी

आधुनिक कहानी के विकास में फ्रांस की भूमिका अविस्मरणीय है। बाल्जाक जैसे लेखकों ने कहानी में न सिर्फ यथार्थवाद की जमीन तैयार की, बल्कि उसको मुकम्मल अभिव्यक्ति भी दी। बाल्ज़ाक और फ्रांस का कहानी के क्षेत्र में जो योगदान है, वह इस कहावत में चरितार्थ होता है कि उन्नीसवीं शताब्दी बाल्ज़ाक और फ्रांस की शताब्दी थी। उन्नीसवीं शताब्दी का यह समय कहानी की दृष्टि से इसलिए महत्वपूर्ण है कि आज की कहानी के जो भी घटक तत्व हैं उनकी सशक्त अभिव्यक्ति पहली बार इसी दौर में हुई। बाल्ज़ाक की महत्वपूर्ण कहानियाँ उनके संग्रह 'ला कामदी ह्यूमेन' (मानवीय कामदी) में संकलित हैं। इस संग्रह की भूमिका में बाल्ज़ाक ने अपने लेखन के उद्देश्यों की सविस्तार चर्चा की है। एक लेखक के रूप में वह अपने को फ्रांसीसी समाज का सचिव कहता है। बाल्ज़ाक को यह पक्का विश्वास था कि सामाजिक प्रजाति के रूप में मनुष्यों का उसी प्रकार विभाजन किया जा सकता है जिस प्रकार प्रकृति विज्ञानियों ने जन्तुओं का किया है। अपनी कहानियों को बाल्ज़ाक ने इस तरह संगठित किया है कि वह विभिन्न सामाजिक वर्गों और उनके वातावरण को अभिव्यक्त करते हुये लेखक की इस मान्यता को पुष्ट करती है कि वातावरण ही व्यक्ति के विकास को निर्धारित करता है। अपने संग्रह 'ला कामदी हयूमेन' को बाल्ज़ाक ने तीन खण्डों में विभाजित किया है–'विश्लेषणात्मक अध्ययन', 'दार्शनिक अध्ययन' और 'व्यवहारों का अध्ययन'। बाल्ज़ाक ने ज्यादातर कहानियॉ 'व्यवहारों का अध्ययन' नामक खण्ड के अंतर्गत् लिखी है। बाल्ज़ाक की कोशिश थी कि वह तत्कालीन फ्रांसीसी समाज के सभी वर्गों और संस्तरों को चित्रित करे, मगर इसे पूरा करने से पहले ही 1850 में उसका निधन हो गया।

बाल्ज़ाक ने कहानी विधा में महत्वपूर्ण परिर्वतन किए। कहानी को उसके पारंपरिक ढाँचे से बिल्कुल अलग मार्ग पर अग्रसर करने में बाल्ज़ाक को सबसे ज्यादा सफलता मिली। उसकी कहानियों का केन्द्रबिन्दु चरित्र और वातावरण हैं, जिसके चलते वह विशिष्ट व्यक्तियों के बताए, संपूर्ण समाज का कलात्मक अध्ययन बन जाती हैं। कथानक–प्रधान कहानियों से अलग जो, उदाहरण के लिये किसी संकट के विवरण से शुरू होती है और उसके सुलझने पर ख़त्म–बाल्जाक की कहानियाँ हमें चरित्र का और व्यक्ति के प्रकार का या किसी सामाजिक परिघटना और परिवर्तन के कारणों का बोध कराती हैं। निःसंदेह जब तक मनुष्य और उसकी भावनायें हैं, बाल्ज़ाक की कहानियाँ प्रासंगिक है।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बाल्जाक के अतिरिक्त अन्य फ्रांसीसी कहानीकार थे अलेक्सांद्र द्यूमा और अल्फ्रेद दे विग्नी। बाल्जाक की कहानियों के उलट ये लेखक अपनी रूमानी कहानियों के लिये जाने जाते हैं। द्यमा ने ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों को आधार बनाकर रहस्य रोमांच से भरपूर कहानियाँ लिखी। विग्नी ने कुछ महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखी हैं जो उनके दो संग्रहों में संकलित हैं। इनमें पहला है 'स्तेलोःए सेशन विद डा0 नॉयर' जिसमें विग्नी ने दर्शन और कहानी को जोड़ने का प्रयास किया है। अपनी कहानियों में उसने कवियों, सैनिकों और पैगंबरों का बचाव किया है जिन्हें वह समाज से बहिष्कृत मानता था। उसकी कहानियों में तत्कालीन समाज के प्रति घृणा का भाव मिलता है क्योंकि वह मानता था कि यह समाज बुद्धिमानों से नफरत करता है। उसके दूसरे कहानी संग्रह 'द मिलिटरी नेसेसिटी' में तीन कहानियाँ हैं, जिसमें लेखक ने उन सैनिकों की भूमिका का महिमामण्डन किया है, जो उसकी नजरों में समाज द्वारा तिरस्कृत हैं। विग्नी ने पैंगंबरों के कष्टों को आधार बनाकर तीसरे संग्रह की भी योजना बनाई थी, मगर वह एक ही कहानी पूरी कर सका जिसका शीर्षक है 'डैने'। विग्नी की कहानियाँ अपने साधारण कथानक और उत्कृष्ट तकनीक के लिए सराही जाती हैं। इनमें दो कहानियाँ खासतौर से उल्लेखनीय है– 'लॉरेते' और 'कप्तान रेनॉद'।

प्रोस्पर मेरिमी का नाम भी फ्रांसीसी कहानीकारों के बीच आदर से लिया जाता है। उनकी कहानियों में लोकसंस्कृति, स्थानीयता और रूमानी सम्मोहन के तत्व प्रमुखता से पाए जाते हैं। इन कहानियों की वस्तुनिष्ठता और विवरणात्मकता यथार्थवाद के करीब हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– 'मेतियो फाल्केन', 'कोलम्बा', 'कारमैन' आदि।

उन्नीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में प्रमुख फ्रांसीसी कहानीकार है लाबेर, मोपासाँ और ज़ोला। लाबेर का प्रसिद्ध कहानी संग्रह है–'थ्री टेल्स'। इसमें तीन कहानियाँ संग्रहीत हैं– 'ए सिंपल हार्ट', 'द लीजेंड ऑव सेंटजूलियन, हॉस्पीटेलर' और 'हेरोदियस'। तीनों कहानियों की शैली एक दूसरे से नितांत भिन्न है। शैली की यह विविधता लोबेर को कहानी के कुशल लेखक के रूप में स्थापित करती है। 'ए सिंपल हार्ट', तत्कालीन समाज में व्याप्त धनलोलुपता का चित्रण करती है। 'हॉस्पीटेलर' का परिवेश मध्यकालीन है। यह परिवेश कहानी के पात्रों को संचालित करता है। कहानी में नियति एक विराट नियंत्रक शक्ति के रूप में उभरती है। 'हेरोदियस' का घटनाक्रम मात्र एक दिन का है। एक दिन की घटनाओं के विवरणात्मक चित्रण और प्राकृत बिंब इस कहानी की विशेषता हैं। तत्कालीन समाज की मानसिकता को अच्छी तरह समझते हुए लोबेर ने इस कहानी में विभिन्न दृश्यों के कुशल संगठन द्वारा पात्रों की मनःस्थिति को उकेरा है। तमाम विविधताओं के बावजूद इस संग्रह की कहानियाँ पात्रों की भावनाओं और सामाजिक शक्तियों के बीच संघर्ष को विश्वसनीयता से प्रतिष्ठित करती हैं। यह संघर्ष ही लोबेर की कहानियों को जीवन देता है।

मोपासाँ ऐसे फ्रांसीसी लेखक हैं जिनकी सबसे ज्यादा ख्याति उनकी कहानियों के आधार पर ही है। अन्य फ्रांसीसी लेखक जैसे बाल्ज़ाक और लोबेर, महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखने के बावजूद सफल उपन्यासकारों के रूप में अधिक प्रतिष्ठित हुए। मगर मोपासाँ ने वाग्विधग्ता, विडंबना, सामाजिक आलोचना, आदर्शवाद और मनोवैज्ञानिक गहनता को सौंदर्यशास्त्रीय आस्वाद में पिरोकर बड़े पैमाने पर कहानी संग्रहों की रचना की। उनकी कहानियाँ तत्कालीन फ्रांस की सर्वसुलभ स्थितियों और चारित्रिक रूपों का विवरण देती हैं। साथ में युद्ध और मृत्यु, भय, पाखण्ड, सुख की तलाश, स्त्रियों का शोषण एवं यथार्थ और आभास का द्वंद्व जैसे सार्वत्रिक विषयों की गहन पड़ताल करती है। वेश्याओं से लेकर

व्यभिचारी पुरूषों और स्त्रियों तक तथा किसानों से लेकर कुलीनों तक आधुनिक समाज की असाधारण विविधता को उन्होनें अपने चरित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनके जीवनकाल में ही उनकी कहानियाँ फ्रांस के भीतर और बाहर प्रसिद्ध हो चुकी थी। रोजमर्रा की स्थितियों में सार्वजनिक तत्वों को प्रकाशित करने में कहानीकार मोपासाँ को विशेष योग्यता हासिल थी। उन्होंने वाक्चातुर्य और न्यूनोक्तियों का प्रयोग करके संवादों में कलात्मक आस्वाद उत्पन्न किया। उन्होनें आगे आने वाली पीढ़ियों के अनेक ख्यातिप्राप्त कहानीकारों को अपनी कला से प्रभावित किया।

एमिल ज़ोला की कहानियाँ प्रकृतवाद की प्रवर्तक बनीं। ज़ोला ने उन्नीसवीं शताब्दी को विज्ञान के प्रभुत्व वाली शताब्दी के रूप में देखा। उनका स्पष्ट मानना था कि साहित्य मानवीय शक्तियों के तटस्थ अध्ययन और प्रेक्षण का सबसे अच्छा साधन है। जोला को उस दौर में प्रचलित जैव वैज्ञानिक निर्धारणवाद ने प्रभावित किया। उनकी कहानियाँ मानव व्यवहार के सिद्धान्तों को वैज्ञानिक परिदृश्य प्रदान करती हैं। इन कहानियों में पात्र स्वयं में उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं, जितना कि उनका शरीर क्रिया–विज्ञान। ज़ोला की कहानियाँ इस आस्था को प्रमाणित करती है कि साहित्य का उद्देश्य मनुष्यता और प्रकृति को वैसे ही चित्रित करना है जैसे कि वह वास्तव में है। यह कहानियाँ जीवन की चुभनेवाली सच्चाईयों को बड़े विस्तार से प्रस्तुत करती हैं। ज़ोला ने लोबेर की यथार्थवादी विरासत को न सिफ्र आगे बढ़ाया, बल्कि एक कदम आगे जाकर उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में स्त्री और पुरूषों के सामाजिक, राजनैतिक और यौन जीवन के अधम समझे जाने वाले पक्षों को अपनी कहानियों का केन्द्र बनाया। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं– 'स्टोरीज फॉर निनॉन', 'ए सोल्जर्स ऑनर एण्ड अदर स्टोरीज', 'मदाम सूर्दिस' आदि।

9.2.2 फ्रांसीसी कहानी और बीसवीं सदी

बीसवीं सदी में फ्रांसीसी कहानी में बदलाव आता है। उन्नीसवीं सदी की यथार्थवादी विरासत को संजोते हुऐ कहानी में शिल्प के स्तर पर प्रयोगों की शुरूआत होती है। दो विश्वयुद्धों का साक्षी बनी इस शताब्दी में उन्नीसवीं सदी के भय तथा आशंकायें और अधिक तीव्र हो उठते हैं। भयानकता, भयावहता, लाचारी और शोषण के नए आयाम उभर कर सामने आते हैं। साथ ही मानवीय जिजीविषा, करूणा और सहानुभूति के नए अनुभव फ्रांसीसी समाज के बोध का हिस्सा बनते हैं। फ्रांसीसी दृष्टि के बोध में आया यह विस्तार कहानी के क्षेत्र में अभिव्यक्त होता है। बीसवीं शताब्दी में फ्रांस में आधुनिकतावाद का जन्म हुआ और स्त्री लेखन को नई धार मिली।

नये बोध के कहानीकारों में आंद्रे ज़ीद का नाम महत्वपूर्ण है। ज़ीद की कहानियाँ फ्रांसीसी परंपरा के नैतिकता बोध को नया मोड़ देती हैं। उन्नीसवीं सदी की फ्रांसीसी कहानियाँ समाज को केन्द्र में रखकर लिखी गयी थीं, मगर ज़ीद की कहानियों का केन्द्र व्यक्ति है। अपनी कहानियों मे ज़ीद ने व्यक्ति के अनुभवों के प्रामाणिक चित्रण पर अधिक बल दिया, यह उनके व्यक्तिवाद का अनूठा पहलू है। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद समाज में जो उद्वेलन और रोमांच उत्पन्न हुआ, ज़ीद ने अपनी कहानियों में उसे नैतिक सद्भाव से जोड़ने की कोशिश की। उनके प्रमुख संग्रह है– 'मार्शलैण्ड्स' और 'प्रोमिथियस मिसबाउंड'।

प्रख्यात फ्रेन्च कवि पॉल वलेरी ने 'एन ईवनिंग विद मि0 तेस्ते' नामक विख्यात कहानी लिखी जिसमें उन्होनें बुद्धि और भाव तथा अस्तित्व और अनस्तित्व के बीच संघर्ष को

बखूबी चित्रित किया। वलेरी की कविताओं की समझ के लिए इस कहानी को पढ़ना अपरिहार्य है क्योंकि यह लेखक के विचारों और जीवन का प्रतिनिधित्व करती है।

लेखक अनातोले फ्रांस के कहानी संग्रहों 'क्रेंकेबाइल,' 'दि व्हाईट स्टोन', 'दि सेवेन वाइव्स ऑव ब्लूबर्ड', और 'टेल्स फ्राम दि मदर ऑव पर्ल कास्केट' की कहानियॉ काफी लोकप्रिय हुई। इन कहानियों को पढ़ने के बाद यह एहसास होता है कि यदि यथार्थवाद का अर्थ सत्य है, तो हमें अनाताले फ्रांस के यथार्थवादी सौंदर्यबोध का कायल होना पड़ेगा।

अल्बेर कामू का कहानी संग्रह 'एक्जाइल एण्ड दि किंगडम' फ्रांसीसी और विश्व कहानी में अलग हैसियत रखता है। कामू की कहानियाँ अस्तित्वाद को अभिव्यक्त करती है। इन कहानियों में नृशंसता, आक्रामकता, जाति–संहार और साम्राज्यवाद से पराभूत युग की पीड़ित आत्मा सुरक्षित है।

अस्तित्ववाद के शिखर पुरूष ज्याँ पाल सार्त्र के कहानी संग्रह 'द वाल एण्ड अदर स्टोरीज़' को परिपक्व और सृजानात्मक अभिव्यक्ति के लिए जाना जाता है।

9.2.3 फ्रांसीसी कहानी में स्त्री लेखन

फ्रांस में स्त्री लेखन की लम्बी परंपरा रही है। मदाम लाफ़ायते, मदाम स्ताएल, जार्ज सैण्ड, सीमोन द बोउवा, कोलेत, मार्गूरीत दूरा और नताली सॉरोत जैसी लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में स्त्री दृष्टिकोण को अभिव्यक्त किया है।

जार्ज सैण्ड, उन्नीसवीं शताब्दी की फ्रेंच लेखिका थी। उनकी कहानियाँ रूमानी आंदोलन का हिस्सा थीं और वह अठारहवीं शताब्दी के चिंतक रूसो के विचारों से प्रभावित थीं। उनकी धारणा थी कि मनुष्य नैतिक आचरण और अच्छाई से युक्त है और उसे किसी सामाजिक रीति को मानने या किसी संगठित धर्म में विश्वास करने की जरूरत नहीं है। अपनी कहानियों मे सजग स्त्री चेतना के साथ इस धारणा को उन्होने लोकप्रिय बनाया। 'टेल्स ऑव ए ग्रैंडमदर' उनका कहानी संग्रह है। फ्रैंच लेखिका कोलेत ने रोजमर्रा के मानवीय अनुभवों और समस्याओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया। प्रमुख संग्रह–'द स्टोरीज ऑव कोलेत'।

बीसवीं शताब्दी की फ्रेंच लेखिका मार्गूरीत दूरा ने महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखीं। दूरा की कहानियाँ स्त्री और स्त्री देह की सहनशील प्रकृति को रेखांकित करती हैं, जो अक्सर कल्पनाशक्ति के आवेग और प्राकृतिक आपदाओं के समक्ष लाचार नजर आती है। उनकी प्रसिद्ध कहानी है 'द बो'।

बीसवीं शताब्दी की एक अन्य फ्रांसीसी लेखिका नताली सॉरोत ने अपनी कहानियों में मानव बोध और स्वभाव के सूक्ष्म उतार–चढ़ाव को बड़ी शिद्दत से दर्ज किया है। स्मृतियों को सहजता से जगाकर और अवचेतन के आवेगों को हवा देकर उनकी कहानियों का सूक्ष्म मनोविज्ञान व्यक्तिवादी विलक्षणताओं की सीमित सतह को तोड़कर मनुष्य के सार्वजनिक भावावेगों को अभिव्यक्त करता है। प्रमुख कहानी संग्रह–'ट्रॉपिज्म्स', 'द यूज ऑव स्पीच' और 'ऑवरेज'।

लेखिका फ्रांस्वा सेगान की कहानियों में निठल्ले अमीरों के जीवन के स्वार्थी और खतरनाक पहलुओं की छवियाँ दिखती हैं। 'सिल्केन आईज़' और 'इंसीडेंटल म्यूजिकः स्टोरीज' उनके कहानी संग्रह हैं।

9.3 ब्रिटेन में कहानी

ब्रिटेन के कहानीकारों ने विश्व साहित्य में कहानी को प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ब्रिटेन में भी सही मायने में, आधुनिक कहानी का आविर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी में ही हुआ। सर वाल्टर स्कॉट ने अपनी कहानियों में इतिहास की पुनर्सृष्टि की। उनकी कहानियों ने लोकप्रिय नायकों की उस छवि को गढ़ा जिसका असर ब्रिटेन और ब्रिटेन के बाहर अनेक कहानीकारों के मन में लंबे समय तक रहा। ब्रिटेन में कहानी को एक लोकप्रिय विधा के रूप में स्थापित करने का श्रेय स्कॉट को ही जाता है। स्कॉट ने इतिहास को आधार बनाकर जो कथा–साहित्य रचा, उसने आगे आने वाली कथा–लेखकों की पीढ़ी को ऐतिहासिक दृष्टि अपनाने को प्रेरित किया। स्कॉट के प्रमुख कहानी संग्रह है– 'वांडरिंग विलीज टेल,' 'क्रानिकल्स ऑव कैननमेट', 'डेथ ऑव द लेयर्डस जॉक', 'द टेपेस्ट्रीड चैंबर' आदि।'

राबर्ट लुई स्टीवेंसन ने रहस्य रोमांच से भरपूर कहानियाँ लिखकर ब्रिटेन में कहानियों का पाठक वर्ग तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'द न्यू अरेबियन नाइट्स' और 'मोर न्यू अरेबियन नाईट्स' इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश कहानी को वयस्क बनाने का श्रेय चार्ल्स डिकेंस को जाता है। उन्होने कहानी में सामाजिक यथार्थवाद को प्रतिष्ठा और लोकप्रियता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कहानी विधा में डिकेंस ने नए प्रयोग किए। डिकेंस ने ब्रिटिश समाज में व्याप्त कुरीतियों पर खुल कर प्रहार किया। डिकेंस ने कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से अपने समाज की जो आलोचना की उसका ब्रिटेन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उनके द्वारा गढ़े गये चरित्र आज भी यादगार हैं।

आर्थर कोनन डॉयल ने जासूसी कहानियाँ लिखी और शरलॉक होम्स जैसा जासूसी चरित्र गढ़ा। जहां एक तरफ डिकेंस जैसे लेखक सामाजिक परिघटनाओं के कार्य कारण संबंधों की तफ़्तीश अपनी कहानियों में कर रहे थे, वहीं कोनन डॉयल जैसे लेखक हत्या और अपराध की गुत्थी को सुलझाने में कार्य कारण संबधों की भूमिका को अपनी कहानियों का विषय बना रहे थे। चाहे डिकेंस हों या कोनन डॉयल, दोनों ने ही अपनी कहानियों में तक्रणा और मानव विवेक को महिमामण्डित किया। ये बात अलग है कि डिकेंस की कहानियों का फ़लक जासूसी कहानियों से कहीं ज़्यादा व्यापक है। जासूसी कहानी की परंपरा को आगाथा क्रिस्टी जैसी लेखिकाओं ने आगे बढ़ाया।

डिकेंस की यथार्थवादी पंरपरा को अपनी कहानियों में अर्नाल्ड बेनेट ने आगे बढ़ाया। उन्होनें कहानियों में आंचलिकता को प्रतिष्ठित किया। ब्रिटेन के आँचलिक जीवन के सूक्ष्म विवरण, वातावरण की यथार्थ अभिव्यक्ति, चरित्रों का संघर्ष, गुम होती परंपराओं और अतीत बनते मानवीय बंधनों का प्रामाणिक चित्रण बेनेट की कहानियों में मिलता है।

अंग्रेज़ी कहानी के विकास में जोसेफ कॉनरेड का योगदान महत्वपूर्ण है। पोलिश होने के बावजूद उन्होनें अंग्रेज़ी भाषा में कहानियाँ लिखीं और अंग्रेज़ी के प्रतिष्ठित लेखक बने। माना जाता है कि कॉनरेड ने उन्नीसवीं शताब्दी की अंग्रेज़ी कहानी को शिल्प, कथ्य और मूल्यों की उस नवीन राह पर मोड़ा जो चलकर बीसवीं सदी की कहानियों तक पंहुची। उनके महत्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं– 'टेल्स ऑव अनरेस्ट', 'यूथः ए नेरेटिव एण्ड अदर स्टोरीज', 'टायकून एण्ड अंदर स्टोरीज', 'ए सेट ऑव सिक्स' आदि।

रुड़यार्ड किपलिंग को कहानी विधा में विशेष महारत हासिल थी। कहा जाता है कि किंपलिग ने कहानी में जीवन के हजारों पहलुओं को अलग–अलग तरह से ऐसे छुआ कि वह हर काल के कहानी लेखकों के लिए अनुकरणीय बन गये। उनके प्रमुख कहानी संग्रह है– 'द जंगल बुक', 'द मैन हू वुड बी किंग', 'द सिटी ऑव ड्रेडफुल नाईट एण्ड अंदर प्लेसेज़', 'द सेकेंड जंगल बुक' आदि।

डी0एच0 लॉरेंस और जेम्स ज्वायस की कहानियों में बीसवीं सदी का मनुष्य आकार लेता है। लॉरेंस ने अपनी कहानियों में यौन मनोविज्ञान जैसे अछूत विषय को गहन तीव्रता और साहस के साथ प्रतिष्ठित किया और प्रचलित नैतिक मानदण्डों को कठघरे में खड़ा किया। प्रमुख कहानी संग्रह–'प्रशियन ऑफिसर एण्ड अदर स्टोरीज', 'इग्लैण्ड, माई इंग्लैण्ड', 'द वुमन हू रोड अवे एण्ड अदर स्टोरीज,' 'लव अमंग दि हेरेटिक्स', 'द लवली लेडी एण्ड अदर स्टोरीज', 'मार्डन लवर' आदि।

जेम्स ज्वायस ने कहानी विधा में क्रान्तिकारी परिवर्तन उत्पन्न किया। ज्वायस ने कहानी के शिल्प में साहसी प्रयोग किए। अपने एकमात्र कहानी संग्रह 'डब्लिनर्स' में ज्वायस ने तत्कालीन समाज की व्यंग्यात्मक छवियां रचीं और उस वातावरण का विश्वसनीय खाका तैयार किया जो मनुष्यों की इच्छाशक्ति और आध्यात्मिक सत्ता को पंगु बना डालता है। सही मायने में ज्वायस अंग्रेजी कहानी में आधुनिकतावाद के प्रवर्तक बने।

सामरसेट मॉम की कहानियाँ आलोचकों को भले ही रास न आयी हों, मगर पाठकों के बीच उनकी लोकप्रियता असंदिग्ध है। आलोचकों की उपेक्षा के बावजूद मॉम कुशल शिल्पकार और व्यंग्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए। अपनी रचनाओं में उन्होनें मनोरंजन को महत्वपूर्ण माना और शिक्षाप्रद कहानियाँ लिखीं। जो कहानी को मनोरंजन के साथ शिक्षा प्रदान करने वाली विधा मानते है, सॉमरसेट मॉम निःसंदेह उनके आदर्श हैं। प्रमुख कहानी संग्रह–'ओरियंटेशंस', 'द ट्रेवेलिंग ऑव ए लीफ', 'आह किंगः सिक्स स्टोरीज', 'ईस्ट एण्ड वेस्टः द कलेक्टेड शार्ट स्टोरीज़,' 'कॉस्मोपॉलिटन्स' आदि।

एवलीन वॉ ने आधुनिक जीवन की आध्यात्मिक रिक्तता को आधार बनाकर कहानियाँ लिखी। उनकी कहानियाँ व्यंग्य की तेज धार तथा मानवीय प्रकृति के अधम पक्ष और बीसवीं शताब्दी के भय एवं आवेगों के चित्रण के लिए पहचानी जाती है। प्रमुख कहानियाँ 'मिस्टर लवडेज़ लिटिल आउटिंग', 'टैक्टिकल एक्सरसाईज़' आदि।

प्रथम विश्वयुद्ध के पहले के ब्रिटिश कहानीकारों में हेक्टर ह्यू मुनरो 'साकी' का नाम उल्लेखनीय है। उनकी कहानियाँ प्रथम विश्वयुद्ध के पहले के एडवर्डकालीन ब्रिटिश समाज के कुलीनों के खोखलेपन को व्यंग्यात्मक भाषा में उजागर करती हैं। तत्कालीन समाज में व्याप्त दोहरे मानदण्डों, मिथ्याभिमानों, दंभो और लोभों का विश्वसनीय चित्रण इन कहानियों में हुआ है। प्रमुख संग्रह 'रेजिनाल्ड', 'रेजिनाल्ड इन रशिया', 'बीस्ट्स एण्ड सुपर बीस्ट्स', 'ट्वायज़ ऑव पीस', 'द क्रॉनिकल ऑव क्लोविस' आदि।

बीसवीं शताब्दी में विज्ञान प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व विकास ने विज्ञान आधारित कथा–साहित्य को पनपने का पर्याप्त अवसर दिया। विज्ञान आधारित कहानियों के लेखक के रूप में एच0जी0 वेल्स और आर्थर सी0 क्लार्क को काफी प्रतिष्ठा मिली। दोनों लेखकों की प्रमुख चिंता यही थी कि विज्ञान की निरन्तर प्रगति और उसके खतरनाक प्रयोगों के बीच मानवता का भविष्य कैसा होगा। जहॉ एच0जी0 वेल्स का विश्वास था कि मानवजाति का समूल नाश हो जाएगा, वहीं क्लार्क का विचार था कि मानव जाति नए किस्म के

अधिक सक्षम प्राणियों में रूपांतरित हो जाएगी। वेल्स की प्रमुख कहानियाँ हैं– 'टेल्स ऑव स्पेस एण्ड टाईम', 'ए डोर इन द वाल' 'द वेकेण्ट कंट्री', 'द कंट्री ऑव द ब्लाईंड' आदि। क्लार्क के महत्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं– 'एक्सपेडिशन टु अर्थ,' 'रीच फॉर टुमारो', 'टेल्स फ्रॉम व्हाईट हार्ट' आदि।

बीसवीं शताव्दी में जीवन की यांत्रिकता, नैतिक खोखलेपन, युद्धों की भयानकता और तबाही ने कुछ कहानीकारों को व्यंग्य के उस रूप की तरफ मोड़ा जिसे 'डार्क ह्यूमर' कहा जाता है। 'डार्क ह्यूमर' के अंतर्गत मानवीय पतन और त्रासदी की कहानियों को व्यंग्यात्मक लहजे में बयान किया जाता है। 'डार्क ह्यूमर' की कहानियों के लेखक के रूप में रोल्ड डाहल को काफी प्रतिष्ठा मिली। डाहल की प्रमुख कहानियाँ हैं– 'समवन लाईक यू', 'ओवर टु यू', 'स्विच बिच', 'टेल्स ऑव अनएक्सपेक्टेड' आदि।

जॉन मॉर्टीमर ने अपनी कहानियों में ऐसे चरित्र और कथानक रचे जो रहस्य–रोमांच, हास–परिहास और सामाजिक आलोचना को कुशलतापूर्वक मिश्रित करते हैं। उनकी 'रम्पोल सीरीज' प्रसिद्ध हुई।

ऑस्कर वाईल्ड और पी0जी0 वोडहाउस ने भी मनोरंजन से भरपूर कहानियाँ लिखी। समकालीन ब्रिटिश लेखकों में किंग्सले एमिस और मार्टिन एमिस उल्लेखनीय हैं।

ब्रिटिश कहानी में लेखिकाओं की समृद्ध परंपरा रही है। अगाथा क्रिस्टी और पी0डी0 जेम्स जैसी लेखिकाओं ने जासूसी और रहस्य रोमांच से भरपूर विषयों पर, जो कि पुरूष वर्चस्व के द्योतक माने जाते थे, कहानियाँ लिखीं। अन्य लेखिकाओं ने सदियों से दमित और शोषित नारी की आशाओं, आकांक्षाओं और चिंताओं को अपनी कहानियों में स्वर दिया। कैथरीन मैन्सफील्ड ने अपने स्त्री चरित्रों की भावनाओं और बेचैनियों को अभिव्यक्त करने के लिए कहानी की प्रचलित धारणाओं को तोड़ते हुऐ सटीक बिंबो और धारदार संवादों का प्रयोग किया। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– 'इन ए जर्मन पेंशन' 'ब्लिस', 'द गार्डन पार्टी', 'द डव्स नेस्ट', 'द लिटिल गर्ल' आदि। डैने डयू मॉरिये की कहानियाँ स्त्री–मनोविज्ञान को गहराई से संबोधित करती हैं। ड्यू मॉरिये को स्त्री–पुरूष की भिन्न मनोदशाओं और उससे उपजने वाले तनाव का चित्रण करने में महारत हासिल थी। इस तनाव ने उनकी कहानियों में रहस्य और रोमांच को निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ड्यू मॉरिये की कहानियाँ मूलतः रहस्य प्रधान है मगर यह रहस्य स्त्री चरित्रों की मानसिक दुविधाओं को बखूबी प्रदर्शित करता है। प्रमुख कहानियाँ– 'द बर्ड्स', 'कम विंड, कम वेदर', 'हैप्पी क्रिसमस', 'अर्ली स्टोरीज़' आदि। एक कहानीकार के रूप में एलिज़ाबेथ बोवेन ने मानव–स्वभाव की विदग्ध और बारीक छटाओं का बखूबी चित्रण किया। किशोरावस्था का असंतोष और उससे उपजा पीढ़ियों का संघर्ष उनकी कहानियों की मुख्य विषयवस्तु हैं। प्रमुख कहानियाँ–'इनकाउटर्स', 'एन लीज', 'द डीमन लवर', 'द कैट जम्प्स' आदि। रूथ प्रवेर झाबवाला ने भारत और पश्चिम की सांस्कृतिक मुठभेड़ को अपनी कहानियों का विषय बनाया। उनकी कहानियाँ दर्शाती हैं कि भारत और पश्चिम के बीच का संघर्ष महज रंगभेद के कारण नहीं है बल्कि उसकी जड़ें सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक जटिलताओं में निहित हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'द हाउसवाईफ,' 'आउट ऑव इंडिया', 'एन एक्सपीरियंस ऑव इंडिया', 'लाईक बर्ड्स, लाईक फिशेज़' आदि। डोरिस लेसिंग की कहानियाँ मानवीय अनुभव में निहित शिक्षाप्रद मूल्यों की खोज करने और संस्थाओं तथा सामाजिक बंधनों का मनुष्य के मानस पर पड़ने वाले प्रभावों का अन्वेषण करने के लिए विख्यात हैं। प्रमुख कहानियाँ–'दिस वाज़ द ओल्ड चीस कंट्री,' 'नो विचक्राट फॉर सेल', 'द हैबिट ऑव लविंग', 'ए मैन एण्ड टू वुमैन,' 'एफ्रीकन स्टोरीज़' आदि। ज्याँ रीस की

कहानियाँ बेरोजगार और अकेली स्त्री की चिंताओं का यथार्थ चित्रण करती हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– स्लीप इट ऑफ लेडी,' 'द लेट बैंक,' 'टाइगर्स आर बेटर लुकिंग' आदि। एडना ओ'ब्रायन और बेरिल बेनब्रिज द्वितीय विश्व युद्दोत्तर ब्रिटिश कहानी की प्रमुख लेखिकाएँ हैं। बेरिल बेनिब्रिज ने अपनी कहानियों में 'डार्क ह्यूमर' का प्रयोग किया। उनके चरित्र यथार्थ जीवन की जटिलताओं को व्यंजित करते हैं। उनकी कहानियाँ निम्न वर्ग के लोगों के संघर्ष, उनके जीवन की विसंगतियों, असंतोषों और त्रासदियों का विश्वसनीय चित्रण करती हैं। प्रमुख कहानियाँ 'मम एण्ड मि0 आर्मीटेज', 'कलेक्टेड स्टोरीज' आदि। एडना ओ'ब्रायन ने अपनी कहानियों में यौन परिपक्वता को प्राप्त करती आयरिश कन्याओं की मनःस्थितियों का और अपने समाज में आने वाले बदलावों के प्रति आयरिश महिलाओं के मनोवैज्ञानिक नज़रिए का सूक्ष्म चित्रण किया है।

9.4 जर्मनी में कहानी

जर्मनी में कहानी–विधा को लोकप्रिय बनाने में ग्रिम बंधुओं (जैकब ग्रिम और व्हिल्म ग्रिम) का योगदान असंदिग्ध है। उनके द्वारा रचित जर्मन–परिकथाओं के संग्रह को काफी लोकप्रियता मिली। ग्रिम बंधुओं की कथाशैली सादगी से युक्त है और बच्चों की कल्पना–शक्ति को प्रभावित करती है। आगे चलकर यथार्थवादी कहानीकारों ने जर्मन कहानी को परिकथाओं से मुक्त किया और सामाजिक आलोचना को कहानी में प्रतिष्ठित किया। इन लेखकों में ई0टी0ए0 हॉफमैन का नाम उल्लेखनीय है। हॉफमैन के चरित्र समाज द्वारा प्रताड़ित हैं और समाज द्वारा अनुमोदित परंपराओं को मानने से इंकार करते हैं। वह सामाजिक सत्ता के ताकतवर प्रभाव के आगे टिक नहीं पाते और अजीबोगरीब घटनाक्रम में भाग लेने को बाध्य होते हैं। जीवन की विसंगतियों का चित्रण करने में हॉफमैन को कुशलता हासिल थी। प्रमुख कहानियाँ– ''फैंटेसी पीसेज़', 'इन कैलोट्स मैनर,' 'लिटिल जैक्स', 'द सेंरापियन ब्रेदेरेन', 'प्रिंसेज ब्रैम्बिला' आदि।

टॉमस मान ने जर्मन कहानी में यथार्थवादी पंरपरा को नया मोड़ दिया। मान ने बुजर्आ समाज के बंजरपन को बखूबी चित्रित किया। बीसवीं शताब्दी में मनुष्य द्वारा भोगी गयी भयानक विद्रूपतायें मान की कहानियों का विषय बनीं। सामुदायिकता का ह्रास, वैयक्तिक और सांस्कृतिक मानदण्डों का पराभव, रूढ़िवादी समाज और एकाधिकार वादी शासन के विरूद्ध व्यक्ति का असंतोष मान की कहानियोँ में मुखरित हुए। प्रमुख कहानियाँ–'ट्रिस्टान', 'चिल्ड्रेन एण्ड फूल्स', 'स्टोरीज ऑव थ्री डिकेड्स', 'डेथ इन वेनिस' आदि।

बर्तोल्त ब्रेख्त की कहानियाँ बीसवीं सदी के सांस्कृतिक संकट को व्यंग्यात्मक सुर में संबोधित करती हैं। नाजीवाद और फासीवाद के खिलाफ मनुष्य की अदम्य जिजीविषा और संघर्ष उनकी कहानियों की पहचान है। खुद ब्रेख्त का जीवन संघर्षों से भरा रहा। लेकिन किसी भी परिस्थिति में उन्होने हार नहीं मानी। ब्रेख्त की कहानिया हर तरह के शोषण और जुल्म के खिलाफ मनुष्य की राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्त करती है। प्रमुख कहानियाँ–'स्टोरीज ऑव मि0 क्यूनर', 'टेल्स फ्राम द कैलेन्डर', 'प्रोसा', 'में–ती' आदि।

जर्मनी में द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर राजनीतिक चेतना को हाइनरिक बॉल ने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया। उनकी कहानियाँ जर्मन समाज में व्याप्त क्रूरताओं और अमानवीय परिस्थितियों पर प्रहार करती हैं। सामाजिक राजनैतिक आलोचना और व्यंग्य की तेज धार बॉल की कहानियों की विशेषता है। बॉल के चरित्रों का मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद

उल्लेखनीय है। प्रमुख कहानियॉ ''ट्रेवेलर, इफ यू कम टु स्पा', 'एबसेंट विदआउट लीव', 'एट्टीन स्टोरीज,' 'चिल्ड्रेन आर सिविलियन टू' आदि।

जर्मन महिला कहानीकारों में क्रिस्टा वोल्फ का नाम उल्लेखनीय है। वोल्फ की कहानियॉ स्त्रीवादी राजनीतिक चेतना की वाहक है। समाज में महिलाओं को मिलने वाला दोयम दर्जा वोल्फ की कहानियों की प्रमुख चिंता है। राजनीतिक साहस और दृढ़ता के चलते उनकी कहानियाँ बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और इक्कीसवीं सदी की शुरूआत में इतिहास की अस्थिर और परिवर्तनशील गति को शिद्दत से दर्ज करती हैं। 'व्हाट रिमेन्स एण्ड अदर स्टोरीज' उनका प्रमुख कहानी संग्रह है।

9.5 रूस में कहानी

रूसी लेखकों ने यूरोप में कहानी को जो ऊँचाई प्रदान की, वह अतुलनीय है। यूरोप की कहानी में लम्बे समय तक यथार्थवाद का झण्डा लगातार बुलंद रखने में रूस की भूमिका महत्वपूर्ण है। आधुनिक तत्वों से युक्त कहानी कला को रूस में अलेक्सांद्र पुश्किन और निकोलोई गोगोल ने प्रतिष्ठित किया। पुश्किन की मर्मभेदी दृष्टि और प्रेक्षण की अद्भुत क्षमता ने कहानियों में जटिल विषयों को मजेदार और रोचक अंदाज़ में प्रस्तुत किया। वक्त और नियति के सामने असहाय चरित्र पुश्किन की कहानियों को त्रासद बनाते हैं। यह कहानियाँ मानवीय स्थितियों के विरोधाभास को कुशलता से उजागर करती हैं। प्रमुख कहानियॉ 'द टेल्स ऑव बेल्किन' और 'द क्वीन ऑव स्पेड्स'।

निकोलोई गोगोल की कहानी 'ईवनिंग्स ऑन ए फार्म नियर दिकांका' को, रूस की ही नही, बल्कि यूरोप की भी आरम्भिक आधुनिक कहानी के रूप में जाना जाता है। गोगोल की कहानियाँ तत्कालीन रूस की सामाजिक विद्रूपताओं पर करारा व्यंग्य करती है। मानवीय करूणा और उल्लास का अद्भुत सम्मिश्रण गोगोल की कहानियों में पाया जाता है। गोगोल की कहानियों में जीवन का फलक बड़ा विस्तीर्ण है। इसमें साधारण से लेकर आश्चर्यजनक तक, श्रमिक से लेकर कुलीन तक और सूक्ष्म से लेकर स्थूल तक का विस्तार है। साथ ही उनके चरित्रों का मनोवैज्ञानिक आवेग कहानी के प्रवाह को दिलचस्प मोड़ दे देता है। इन कहानियों में शिल्प की अद्भुत विविधता है। यहां जादुई यथार्थवाद ('द नोज़') से लेकर डायरी ('डॉयरी ऑव ए मैडमैन') तक का शिल्प मौजूद है। प्रमुख कहानियाँ 'द ओवरकोट', 'डायरी ऑव ए मैडमैन,' 'द नोज़', 'ईवनिंग्स ऑन ए फार्म नियर दिकांका' आदि।

ईवान तुर्गनेव ने जारकालीन रूसी समाज की कुटिलताओं और किसानों की दयनीय स्थितियों तथा क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का विश्वसनीय चित्रण अपनी कहानियों में किया। किसानों को बंधुआ बनाकर रखने का पुरजोर विरोध इन कहानियों में मिलता है। प्रमुख कहानियाँ– 'ए हण्टर्स स्केचेज़', 'फर्स्ट लव एण्ड अदर स्टोरीज़,' 'ए लियर ऑव द स्तेपीज़' आदि।

फ्योदोर दोस्तोयवस्की ने रूसी कहानी में मनुष्य के मनोजगत की विविधतापूर्ण सृष्टि की। किसी गतिविधि (जैसे कि हत्या) में निहित मनोवैज्ञानिक जटिलताएँ और पात्रों के असामान्य बर्ताव तथा सनक का सूक्ष्म और यथार्थ विवरण दोस्तोयवस्की की कहानियों की विशेषता है। इन कहानियों के असामान्य चरित्र पाठकों को समाज द्वारा परिभाषित 'सामान्य' पर प्रश्नचिन्ह लगाने को बाध्य करते हैं। प्रमुख कहानियाँ–'द गैंबलर', 'व्हाईट नाईट्स', 'ए क्रिसमस ट्री एण्ड ए वेडिंग', 'एन ऑनेस्ट थीफ' आदि।

अंतोन चेखव ने कहानी के भीतर व्यंग्य और विनोद के स्तर पर कई प्रयोग किए। चेखव की कहानियाँ अपने तकनीकी कौशल के लिए प्रसिद्ध हैं। ये कहानियाँ व्यंजनाओं और निहितार्थो से भरी पड़ी हैं। मनोवैज्ञानिक तीक्ष्णता और अभिव्यक्ति का संयम चेखव की विशेषता है। इन कहानियों में स्वांग, प्रगति, विनोद, व्यंग्य और विसंगति का सूक्ष्म और अद्वितीय संयोग घटित होता है। आधुनिक जीवन की यान्त्रिकता और स्वार्थ चेखव की कहानियों का मुख्य विषय हैं। अपने अन्य समकालीनों के विपरीत चेखव ने किसानों का महिमामण्डन नहीं किया, मध्यवर्गीय भौतिकता को खारिज किया और उच्चवर्गीय अकर्मण्यता तथा अहम्मतन्यता का पुरजोर विरोध किया। चेखव एक प्रतिबद्ध मानवतावादी थे। चेखव की कहानियाँ आधुनिक जीवन से निराशा व्यक्त करने के बावजूद निराशावादी नहीं हैं। उनके चरित्र मानवता की आत्मिक समृद्धि की व्यंजना करते हैं। चेखव रोजमर्रा की घटनाओं से कहानी बुनने में सिद्धहस्त थे। प्रमुख कहानियाँ– 'द किस', 'गूज़बेरीज़', 'द लेडी विद द डॉग', 'द टेल्स ऑव चेखव' आदि।

रूसी कहानी में यथार्थवाद के सर्वोच्च शिखर लेव तोलस्तोय और मैक्सिम गोर्की की कहानियों में मिलते हैं। तोलस्तोय ने अपने जीवन के अनुभवों, अपने परिवार की बीती जिंदगी, और रूसी जनता की नियति को अपनी कहानियों में स्थान दिया। उन्होंने उन्नीसवीं सदी के रूसी यथार्थ के विविध पहलुओं को कलात्मक प्रामाणिकता के साथ दर्ज़ किया और ऐसे एकीकृत सत्य की खोज का प्रयास किया जो मानव के आध्यात्मिक अस्तित्व की प्रकृति को व्याख्यायित कर सके। तोलस्तोय की रचनाओं ने उस बौद्धिक उत्तेजना को गति प्रदान की जिसने 1917 की रूसी क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। प्रमुख कहानियाँ– 'टेल्स ऑव सेवेस्तोपोल', 'द क्रूजर सोनाटा', 'द डेविल एण्ड अदर टेल्स', 'नोट्स ऑव ए मैडमैन एण्ड अदर स्टोरीज़' आदि।

मैक्सिम गोर्की की कहानियाँ कला के स्तर पर सामाजिक यथार्थवाद की विजय का उद्घोष करती हैं। रूसी जीवन के विविधतापूर्ण और विश्वसनीय चित्र तथा श्रमिक वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण उनकी कहानियों की पहचान बना। इन कहानियों ने रूस की जारशाही से त्रस्त जनता को मुक्ति के लिए प्रेरित किया। इन कहानियों में नए किस्म के चरित्रों का आविर्भाव हुआ। ये चरित्र रूस के विकासमान औद्योगिक समाज के जनसमूहों से गढ़े गये। इन कहानियों ने पहली बार फैक्टरी में काम करने वाले मजदूरों की उस युगप्रवर्तक शक्ति को पहचाना जो भ्रष्ट व्यवस्था को उखाड़ फेकने का सामर्थ्य रखती है। प्रमुख कहानियाँ– 'मकर चुद्रा', 'चेल्काश' आदि।

गोर्की के बाद बीसवी शताब्दी के रूसी कहानीकारों का ज़ोर बाह्य यथार्थ के चित्रण पर उतना नहीं रहा, जितना कि मनुष्य के अंतर्जगत् के यथार्थ पर। पश्चिमी यूरोप के आलोचकों ने इसे रूसी कहानी में व्यक्तिवाद के आविर्भाव के रूप में व्याख्यायित करने की कोशिश की है। जो भी हो, बीसवीं सदी के रूसी कहानीकारों का शिल्प अधिक जटिल है। व्यक्ति के मनोजगत के उतार–चढ़ाव को सूक्ष्म विवरणों में कैद करने की कोशिश उनकी कहानियों में प्रबल है। इन कहानीकारों में बोरिस पास्तरनाक, व्लादिमीर नैबोकोव, एलेक्सांद्र सोल्झेनित्सिन, इसहाक बेबेल का नाम उल्लेखनीय है। पास्तरनाक ने कहानियों को कविताओं की तरह रचा। उनके चरित्र बाह्य यथार्थ को आत्मनिष्ठ प्रामाणिकता के साथ परखते हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– 'लेटर्स फ्रॉम तूला', 'द चाईल्डहुड ऑव लूवर्स' आदि। नैबोकोव की कहानियाँ अपने शैलीगत वैशिष्ट्य के लिए विख्यात हैं मगर लम्बे समय तक इन कहानियों को रूसी परंपरा से विच्छेदित माना गया क्योंकि रूसी साहित्य में सामाजिक प्रासंगिता और नैतिकता की प्रबल उपस्थिति रही है,

जबकि नैबोकोव की कहानियों में इन तत्वों का तिरस्कार है। फिर भी नैबोकोव की कहानियों में कलात्मक तत्व बड़ा प्रभावशाली है। प्रमुख कहानियाँ– 'नाईन स्टोरीज' आदि। सोल्झेनित्सिन की कहानियाँ लेखक के व्यक्तिगत अनुभवों को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। उनकी कहानियों में राजनीतिक और सामाजिक मुद्दे काफी मुखर हैं। उनके चरित्र तत्कालीन सोवियत सत्ता से असंतुष्ट व्यक्ति है। ये कहानियाँ शीतयुद्ध के दौरान सोवियत संघ की तीव्र आलोचना करने के कारण पश्चिमी यूरोप और अमेरिका के सत्ता–प्रतिष्ठानों में काफी सराही गयी। प्रमुख कहानियाँ– 'वी नेवर मेक मिस्टेक्स', 'फार द गुड ऑव द काज' आदि।

बीसवीं शताव्दी की रूसी कहानी में स्त्री–कहानीकारों की भागीदारी बढ़ी है। तात्याना तोल्सतोय रूस की प्रमुख कहानी लेखिका के तौर पर प्रतिष्ठित हैं। उनकी कहानियाँ परिपक्व शिल्प के लिए विख्यात है। शहरी लोकभाषा का रचनात्मक इस्तेमाल उनकी प्रमुख विशेषता है। उनकी प्रमुख कहानियाँ है– 'आन द गोल्डन पोर्च,' 'स्लीपवॉकर इन ए फॉग' आदि।

9.6 इटली में कहानी

यूरोप में कहानी के विकास पर जब भी बात होगी, इटली का जिक्र जरूर होगा। इतावली लेखक बोकैशियो की 'डिकैमरान' में संकलित कहानियों को यूरोप की आरंभिक दौर की स्वतंत्र अभिव्यक्तियों में गिना जाता है। दांते की 'दैवी कामदी' से प्रेरणा लेकर बोकेशियो ने मानवीय कामदी की रचना की और उसे 'डिकैमरान' का नाम दिया। बोकेशियो ने इटली में चौदहवीं शताब्दी में कहानी का जो बीज बोया था, बीसवीं सदी के इतालवी कहानीकारों ने उसे भरे पूरे वृक्ष में तब्दील कर दिया। इनमें लुइगी पिराण्देलो, तोमासी दी लैम्पूदेसा, इतालो काल्विनो, प्राईमो लेवी, सीजर पावीज और अल्बर्तो मोराविया का नाम उल्लेखनीय है। पिराण्देलो ने सिसली के मध्यवर्ग के जीवन को आधार बनाकर प्रकृतवादी कहानियाँ लिखीं। पिराण्देलो ने इतालवी कहानी में आंचलिकता को प्रतिष्ठत किया। इन कहानियों के पात्र आदिम आवेगों और विवेकहीन आशंकाओं से ग्रस्त होकर बेकाबू नियति के शिकार बनते हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं– 'ए हार्स इन द मून', 'बेटर थिंक ट्वाईस अबाउट इट', 'द नेकेड ट्रुथ', 'द मेडेल्स' आदि। तोमासी दी लैम्पूदेसा की कहानी 'रोक्कोन्ती' मानवीय परिस्थितियों में निहित जटिलताओं और विरोधाभासों की खोज करती हैं। इतालो काल्विनो की कहानियाँ मानवीय स्थितियों की आकस्मिकता के चित्रण और कल्पनाशील शैली के लिए विख्यात हैं। काल्विनो ने कहानी के पारंपरिक रूपों में नयी जान फूंकी। साथ ही कहानी के भीतर नयी तकनीकों को भी प्रतिष्ठित किया। उनकी कहानियों में यथार्थ, फंतासी और विनोद का अद्भुत सम्मिश्रण पाया जाता है। प्रमुख कहानियाँ– 'एडम, वन आटरनून', 'अर्जेटीन एण्ट', 'स्मॉग', 'द सीज़ंस इन द सिटी,' 'द वाचर' आदि। प्राईमो लेवी इतावली भाषा के यहूदी लेखक हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'द सिक्सथ डे', 'मोमेट्स ऑव रिप्रीव' आदि।

9.7 अन्य यूरोपीय देशों में कहानियाँ

यूरोप के अन्य देशों में कहानी का मुकम्मल विकास बीसवीं सदी में ही हो पाया। बोस्निया में कहानी को सार्थक विधा के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय ईवो आँद्रिच को जाता है। आँद्रिच की कहानियाँ बोस्निया के साधारण लोागों के जीवन–संघर्ष और अपनी जातीय अस्मिता को विदेशी ताकतों से सुरक्षित रखने की जद्दोजहद को शिद्दत से दर्ज़ करती

हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'द वीज़ियर्स एलीफैंट', 'अनीकाज़ टाईम्स', 'जैको', 'पैनोरमा' आदि।

चेक गणराज्य के प्रमुख कहानीकार हैं– फ्रैन्ज काफ्का और मिलान कुन्देरा। काफ्का की कहानियाँ मानवीय अवचेतन को गहराई तक जाकर भेदती हैं। ये कहानियाँ सहज और सादगीयुक्त गद्यशैली के लिए उल्लेखनीय हैं। मिलान कुंदेरा यूरोप के समकालीन कहानीकारों में काफी प्रतिष्ठित हैं। चेक भाषा और साहित्य को उन्होंने नया विस्तार दिया है। अपनी कहानियों में चरित्रों के जीवन में सेक्स और राजनीति की भूमिका को तलाशते हुए कुंदेरा ने मानवीय अस्तित्व के मौलिक प्रश्नों को संबोधित किया है। इसके लिए उन्होने कथा शिल्प के स्तर पर साहसिक प्रयोग भी किये हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'लाफेबल लवर्स' आदि। डेनमार्क में उन्नीसवीं शताब्दी में हैन्स क्रिश्चियन एण्डरसन ने कहानी विधा को लोकप्रिय बनाया। उन्होने बच्चों के लिए विश्वविख्यात परीकथाएं लिखी जिन्हें वयस्कों ने भी पसंद किया। डेनमार्क की बीसवीं सदी की महिला कहानी लेखक के रूप में इसाक दिनेसन का नाम महत्वपूर्ण है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात मानवीय संवेदना में घर कर गए भय और संत्रास के बिंब उनकी कहानियों में प्रचुरता से मौजूद हैं। दिनेसन का कहानी–संसार अव्याख्यायित और अतार्किक घटनाओं से भरा पड़ा है। यह ताकतवर और बेकाबू शक्तियों द्वारा संचालित है। लेकिन हमें यह ध्यान रखना होगा कि ये अव्याख्यायित और बेकाबू शक्तियाँ बीसवी शताब्दी की धनलिप्सा और यांत्रिकता की उपज है। प्रमुख कहानियाँ– 'विंटर्स टेल्स,' 'एनेक्डोट्स ऑव डेस्टिनी', 'सेवन गॉथिक टेल्स', 'लास्ट टेल्स' आदि।

नार्वे के कहानीकारों में क्नुत हामसुन और सिग्रीद उन्सेत का नाम उल्लेखनीय है। क्नुत हामसुन ने नार्वे की कहानी परंपरा में आधुनिकतावाद की नींव रखी। अपनी आरंभिक कहानियों में उन्होनें अंतमफ्रखी चरित्रों को गढ़ा मगर उनकी बाद की कहानियों में सामाजिक चिंताये साफ दृष्टिगोचर होती है तथा लेखक की वैचारिक प्रतिबद्धताएं और अधिक मुखर होती हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'नाईट रोमर्स', 'टेल्स ऑव लव एण्ड लॉस' आदि। सिग्रीद उन्सेत नार्वे की कहानी में लेखिकाओं की सशक्त उपस्थिति को दर्ज करती हैं। महिलाओं की पीड़ा उनकी कहानियों में अभिव्यक्त हुई है। कहानी लेखन की उनकी सरल शैली ने दुनिया भर के पाठकों का मन मोह लिया है। उनकी कहानियों में कुछ का वातावरण मध्यकालीन है तो कुछ का समसामयिक मगर चाहे मध्यकालीन हो अथवा समसामयिक, दोनो ही स्थितियों में उनकी कहानियाँ स्त्रियों के मनोजगत में गहरी पैठी उत्कण्ठाओं को खूबसूरती से दर्ज़ करती हैं। प्रमुख कहानियाँ 'इमेजेज़ इन ए मिरर', 'फोर स्टोरीज' आदि।

पोलैण्ड में कहानी को लोकप्रिय बनाने का श्रेय हेनरीक सिंकेविच को जाता है। ब्रिटिश लेखक सर वाल्टर स्कॉट की तरह उन्होने इतिहास को आधार बनाकर पोलिश भाषा में कहानियाँ लिखी। उनकी कहानियों का वातावरण भले ही अतीत का हो, मगर सभ्यता के भविष्य से सम्बन्धित सार्वत्रिक मुद्दो को वह बखूबी संबोधित करती हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'द लाइट हाउस ऑव आस्पिनवाल', 'हा–निया', 'लाईफ एण्ड डेथ', 'लिलियान मारिस', 'वेस्टर्न सेप्टेट' आदि। बीसवीं शताब्दी में पोलिश कहानी को यहूदी लेखकों ने नया मोड़ दिया। इनमें स्तानिस्ला लेम और इसाक बाशेविज़ सिंगर का नाम उल्लेखनीय है।

स्पेन के लेखक सरवांतीस ने 'दोन किख़ोते' नामक उपन्यास लिखकर स्पेन ही नहीं, वरन पूरे यूरोप में कथा साहित्य की नीव डाली मगर उनकी ख्याति एक उपन्यासकार की है,

कहानीकार की नहीं। स्पेन में कहानी को मुकम्मल ऊँचाई बीसवीं शताब्दी में कामीलो खोसे सेला ने दिलाई। सेला की कहानियों में स्पेनी राष्ट्रवाद की सार्थक अभिव्यक्ति होती है। सेला की कहानियों के नायक आदिम किस्म के मनोवैज्ञानिक आवेगों द्वारा संचालित है। इन कहानियों के कथानक बहुस्तरीय हैं। किसी आर्केस्ट्रा में गुंथे हुए स्वरों की तरह। इसीलिए सेला की कहानियों का गद्य संगीतमय है। ये कहानियाँ अपने विशिष्ट सौंदर्य बोध के लिए विश्वभर में सराही गयीं। प्रमुख कहानियाँ– 'मारेलो ब्रीतो', 'आरेंजेज़ आर विंटर फ्रूट', 'द काराबिनेरोज़ लवली मर्डर' आदि।

स्वीडन के प्रमुख कहानीकार हैं पेर लागरक्विस्त, सेल्मा लागरलॉफ और ऑगस्त स्त्रिंदबर्ज। सेल्मा लागरलाफ पहली महिला कथाकार है जिन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होने अपनी कहानियों मे स्वीडन की लोक परंपरा को ग्रामीण जीवन की यथार्थवादी अभिव्यक्ति से जोड़ा। उनकी प्रमुख कहानियॉ हैं– 'इनविज़िबिल लिंक्स', 'द क्वींस ऑव कुंगाहाल्ला' ,'क्राईस्ट लीजेंड्स' आदि। पेर लागरक्विस्त ने स्वीडिश कहानी में आधुनिकतावाद को प्रतिष्ठित किया। उनकी कहानियों में कथ्य और शिल्प का अद्भुत सायुज्य देखने को मिलता है। उनके नायक ऐसे व्यक्ति हैं जो जीवन से भौतिक समृद्धि की अपेक्षा न करके आध्यात्मिक तृप्ति की आशा करते हैं। देश, काल और अध्यात्म के परिदृश्यों को संगीतमय उतार–चढ़ाव के साथ इन कहानियों में बुना गया है। प्रमुख कहानियाँ– 'द इटर्नल स्माईल', 'द मैरिज फीस्ट' आदि। ऑगस्त स्त्रिंदबर्ज की ख्याति एक अद्भुत नाटककार के रूप में हैं, मगर उन्होने बेहतरीन कहानियाँ भी लिखीं। उनकी कहानियाँ मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद को अभिव्यक्त करती हैं। इन कहानियों में वर्ग संघर्ष है। कुलीन सत्ता के खोखलेपन के बिंब यहाँ मिलते हैं। व्यक्ति का अकेलापन, उसको छलने वाले अनुभव, सत्य की आत्मनिष्ठता और निरर्थक ब्रह्मांड़ में अपने अस्तित्व को सार्थक आकार देने की जद्दोजहद जैसे आधुनिकतावादी विषय इन कहानियों में अभिव्यक्त होते हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'गेटिंग मैरिड', 'लीजेंड्स', 'फेयर हैवेन एण्ड फाऊल स्ट्रैण्ड' आदि।

9.8 यूरोप के यहूदी कहानीकार

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नात्सियों द्वारा यहूदियों के नरसंहार को आधार बनाकर अद्वितीय कहानियाँ लिखी गईं। सदियों से यहूदियों को शक और संशय की निगाह से देखा गया और उन पर अत्याचार किए गये। यहूदियों पर अत्याचार की इस विरासत ने बीसवी सदी में विकराल रूप लिया। जर्मनी में नात्सीवाद के उदय और द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण यहूदियों को दिल दहला देने वाली यंत्रणा का सामना करना पड़ा। बड़े पैमाने पर अमानवीय तरीके से उनकी हत्यायें की गयीं। नस्लभेद की क्रूरतम यंत्रणाओं को भोगते हुए भी यहूदियो की आत्मिक संस्कृति कभी कमजोर नहीं पड़ी और उन्होने हर कीमत पर संघर्ष करते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा की। यहूदी कहानीकारों ने मानवीय जिजीविषा को नया आयाम दिया। आधुनिक कहानी में 'डार्क ह्यूमर' के तत्व का सबसे ज्यादा विकास यहूदी लेखको ने ही किया। ज्यादातर यहूदी लेखकों ने लेखन के लिए हेब्रू भाषा को अपनाया और एशिया में इज़राईल के निर्माण के बाद वहाँ की नागरिकता ग्रहण की, मगर कुछ यहूदी लेखक यूरोप में ही रहे और यूरोपीय भाषाओं में कहानियाँ लिखीं। इन कहानीकारों में प्राईमो लेवी (इतालवी), इसहाक बेबेल (रूसी), हाईने (जर्मन), रूथ प्रवार झाबवाला (अंग्रेजी), फ्रैन्ज काका (चैक), स्तानिस्लॉ लेम और इसाक बाशेविज़ सिंगर (पोलिश), नताली सॉरौत (फ्रेंच), अहारोन एपलफील्ड (रोमानियाई) आदि का नाम उल्लेखनीय है।

इसहाक बेबल की कहानियाँ शब्दों और शैली की मितव्ययता के लिये जानी जाती हैं। अपने चरित्रों के सम्बन्धों और क्रियाकलापों को विकसित करने के लिए बेबेल काफी चुस्त और पैने कथानकों की रचना करते हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'टेल्स ऑव ओडेसा', 'रैड कैवलरी', आदि। फ्रैंज काफ्का की कहानियाँ मानवीय अवचेतन को गहराई तक जाकर भेदती है। इन कहानियों के चरित्र अपने मनोगत वैशिष्ट्य के लिए विख्यात हैं। इनके माध्यम से काफ्का ने बीसवीं शताब्दी की दमनकारी सत्ता के प्रति मानवता के भय, संत्रास और संशय को अजीबोगरीब, मगर प्रभावशाली मानसिक बिंबो द्वारा अभिव्यक्त किया है। प्रमुख कहानियाँ– 'द मेटामॉर्फोसिस', 'द जजमेंट', 'इन द पीनल कॉलोनी', 'द ग्रेट वाल ऑव चाईना' आदि।

बीसवीं शताब्दी की पोलिश कहानियोँ को नया मोड़ देने में स्तानिस्तॉ लेम और इसाक बाषेविज़ सिंगर का नाम उल्लेखनीय है। स्तानिस्लॉ लेम ने पोलिश कहानी में विज्ञान–कथाओं को प्रतिष्ठित करने की पहल की। वस्तुतः वह चुनिंदा यहूदी लेखकों में से हैं जिन्होंने विज्ञान कथाओं के माध्यम से जीवन की चुनौतियों को मानववादी नज़रिये से परखा है। प्रमुख कहानियाँ– 'द स्टार डायरीज़', 'टेल्स ऑव पिर्क्स,' 'द पायलेट,' 'मॉर्टल इंजिंस', 'द साईबरियाड्स' आदि। इसाक बाशेविज़ सिंगर यिद्दिश–पोलिश रचनाकार हैं। उनकी कहानियों में गुम होते समुदायों और लुप्त होती परंपराओं का जीवंत चित्रण मिलता है। साथ ही धोखा और क्रूरताओं को भोगते मनुष्यों की आत्मा का त्रास भी यहां अभिव्यक्ति पाता है। इन कहानियों के चरित्र हर किस्म के खतरे उठाकर जीवन की सार्थकता की तलाश करते हैं। प्रमुख कहानियाँ– 'गिम्पेल द फूल', 'अलोन,' 'द फ्रेंड ऑव काका', 'शार्ट फ्राईडे,' 'ए क्राउन ऑव फेदर्स' आदि।

अहारेन एपलफील्ड रोमानिया के विश्वविख्यात कहानीकार हैं। ग्यारह साल की उम्र में वे नात्सी कैद से भाग निकले। यहूदियों पर हुए नात्सी अत्याचारों का उनके बाल मन पर गहरा प्रभाव पड़ा जो वयस्क होने पर उनकी रचनाओं में अनूठे ढंग से व्यक्त हुआ। उनकी कहानियाँ यहूदी नरसंहार के भीषण वातावरण का चित्र खींचती है और इस नरसंहार के पहले तथा बाद की यहूदी चिंताओं को स्वर देती है। प्रमुख कहानियाँ– 'अशान', 'इन द विल्डरनेस' आदि।

9.9 सारांश

एम0ए0 हिन्दी के द्वितीय वर्ष के कहानी से संबंधित मॉड्यूल के पाठ्यक्रम 'कहानीः स्वरूप और विकास' से संबंधित तीसरे खण्ड की नवीं इकाई का अध्ययन आपने किया है। यह यूरोप में कहानी के विकास को दर्शाने वाली इकाई है।

इकाई–9 के इस पाठ में हमने यूरोप के विभिन्न देशों में कहानी के विकास पर चर्चा की है। यूरोप में कहानी को उस मौखिक परंपरा से जोड़ा जाता है जिसने होमर के महाकाव्यों 'इलियाड' और 'ओडिसी' को जन्म दिया। आज कहानी विधा ने जो रूप अर्जित किया है, उसका प्रादुर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। फ्रान्स, ब्रिटेन, जर्मनी, रूस, इटली और यूरोप के अन्य देशों में कहानी की दशा और दिशा का परिचय आपने प्राप्त किया है। आधुनिक कहानी के विकास में फ्रांस की भूमिका अविस्मरणीय है। बाल्ज़ाक जैसे लेखकों ने कहानी में न सिर्फ यथार्थवाद की ज़मीन तैयार की, बल्कि उसको मुकम्मल अभिव्यक्ति भी दी। कहानी में लेखिकाओं की समृद्ध परंपरा रही है। इस इकाई में पुरूष कहानीकारों के साथ साथ स्त्री कहानीकारों और उनकी कहानियों की भी

जानकारी आपने प्राप्त की है। जर्मनी में नात्सीवाद के उदय और द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण यहूदियों को दिल दहला देने वाली यंत्रणा का सामना करना पड़ा। बड़े पैमाने पर अमानवीय तरीके से उनकी हत्यायें की गयीं। यहूदी कहानीकारों ने मानवीय जिजीविषा को नया आयाम दिया। ज़्यादातर यहूदी लेखकों ने लेखन के लिए हिब्रू भाषा को अपनाया और एशिया में इज़राईल के निर्माण के बाद वहाँ की नागरिकता ग्रहण की, मगर कुछ यहूदी लेखक यूरोप में ही रहे और यूरोपीय भाषाओं में कहानियाँ लिखीं। यूरोप में रहकर यूरोप की भाषाओं में कहानी लिखने वाले यहूदी लेखकों को भी आप जान चुके/चुकीं है।

अभ्यास

1. फ्रांस में कहानी के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. यूरोप की कहानी में रूस के अवदान को समझाइये।
3. इंगलैण्ड की प्रमुख स्त्री–कहानीकारों का परिचय दीजिये।
4. यूरोप के प्रमुख यहूदी लेखकों और उनकी कहानी कला पर प्रकाश डालिये।
5. स्पेन में कहानी के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY